वर्कशीट पर शिक्षकों के विचार

अक्षता एस बेल्लुदि

कोविड-19 से पहले वर्कशीट का उपयोग कभी-कभार और अमूमन गृहकार्य के रूप में ही होता था। महामारी के दौरान स्कूल बन्द होने के कारण इनका चलन बढ़ा। शिक्षकों के अलावा शिक्षा विभाग ने भी इन्हें विद्यार्थियों के बीच पढ़ाई जारी रखने को सुनिश्चित करने के अन्तिम विकल्प के रूप में देखा। वर्कशीट की सीमा यह है कि इसे शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। लेकिन वर्कशीट उन अवधारणाओं को सुदृढ़ करने के लिए अच्छी विकल्प साबित हुईं जो विद्यार्थियों द्वारा उन कम अवधियों के दौरान सीखी गई थीं, जब शिक्षक उन्हें ऑनलाइन या ऑफ़लाइन पढ़ा सके थे। मैं इस लेख में, सीखने और उसके आकलन के साधन के रूप में वर्कशीट को इस्तेमाल करने वाले कुछ ऐसे शिक्षकों के अनुभव प्रस्तुत हैं, जिनके साथ हम काम करते हैं।

यशोदा पाटिल, शासकीय लोअर प्राइमरी स्कूल, पम्पापति मन्दिर, गंगावती*

बच्चे अपनी कॉपियों में लिखकर ऊब जाते थे, इसलिए उन्हें वर्कशीट भरने में मज़ा आया। इससे मेरे विद्यार्थियों के बीच आत्मविश्वास का भी संचार हुआ, क्योंकि हम उनके द्वारा भरी हुई वर्कशीटों को उनकी फाइलों में जोड़कर रखते थे।

हमने इन फाइलों को उनके सीखने के स्तरों का आकलन करने के लिए रखा था। वर्कशीटों ने मेरे विद्यार्थियों के बीच एक स्वस्थ्य स्पर्धा प्रारम्भ की। वे अपनी वर्कशीटों को हल करने का पूरा प्रयास करते थे। वे अभी भी अपनी फाइलों को अपनी ख़ुद की उपलब्धि के रूप में देखते हैं। वर्कशीटों ने अपने विद्यार्थियों के बीच अधिगम के बुनियादी प्रतिफलों के सीखने को सुदृढ़ बनाने में हमारी बहुत सहायता की। मेरे विद्यार्थी वर्कशीट प्राप्त करने और उन्हें पूरा कर मुझे वापस करने के लिए बहुत उत्सुक रहते थे। उन्हें उन वर्कशीटों में बड़ा आनन्द आता था, जिनमें बहुत सारे चित्र होते थे और रंग भरने की गतिविधियाँ होती थीं। उन्हें भाषा की बजाय गणित की वर्कशीट अधिक रुचिकर लगती थीं। हालाँकि मुझे उन्हें यह समझाना पड़ता था कि प्रश्नों को कैसे हल करना है, क्योंकि कई विद्यार्थी प्रश्नों को समझ नहीं पाते थे। बच्चों को वर्कशीटों में मज़ा आने का एक और कारण भी था। चूँकि बच्चे स्कूल नहीं आ रहे थे, इसलिए उनके माता-पिता उन्हें घर के कार्यों में उलझा दिया करते थे। वे घरेलू कार्यों से बचने के लिए वर्कशीटों का उपयोग करते थे!

अपने पोर्टफ़ोलियो में जोड़े जाने के लिए वर्कशीट को भरने में व्यस्त एक विद्यार्थी।

पुष्पावती एन, शासकीय लोअर प्राइमरी स्कूल, संगपुरा, गंगावती

प्रारम्भ में विद्यार्थियों को यह समझा पाना बहुत कठिन था कि वर्कशीटों का उपयोग कैसे करें। इसके लिए हमने उन वरिष्ठ विद्यार्थियों की सहायता ली, जो वर्कशीटों को पढ़कर छोटे बच्चों को यह समझा सकते थे कि उनमें क्या करने को कहा गया है। कुछ शिक्षित अभिभावकों ने भी अपने बच्चों की सहायता की।

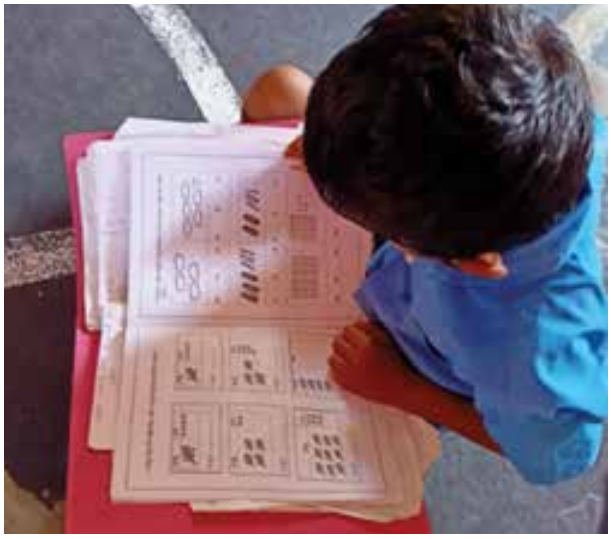

वस्तुओं का संख्याओं के साथ मेल करने वाली वर्कशीट को हल करता एक विद्यार्थी।

हमने वर्कशीटों को पूरा करने के प्रयासों में मदद करने के लिए स्थानीय युवा समूहों की भी सहायता ली, जिसकी वजह से विद्यार्थियों को अपने सीखने के लक्ष्यों को हासिल करने में काफ़ी मदद मिली। जब विद्यार्थी अपनी पूरी की हुई वर्कशीटों के साथ वापस आते थे, तब हम उन्हें बताते थे कि वे इसमें कैसे और सुधार कर सकते हैं। विद्यार्थियों को भाषा की बजाय गणित की वर्कशीटों को हल करना अधिक सरल लगा। भाषा की वर्कशीट हल करने में उन्हें अधिक समय लगता था, क्योंकि वे पढ़ना भूल गए थे।

स्कूल बन्द होने के दौरान वर्कशीटों का उपयोग एक अच्छा अनुभव रहा, इसलिए हम विद्यार्थियों को इन्हें उपलब्ध कराना जारी रखने की योजना बना रहे हैं। हमारा अनुभव बताता है कि वर्कशीटों पर काम करने से विद्यार्थियों को नवोदय और मोरारजी देसाई स्कूलों की भर्ती जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने में भी सहायता मिलेगी।

जयम्मा के, शासकीय लोअर प्राइमरी स्कूल, गुद्ददा कैम्प, गंगावती

हमने विद्यार्थियों को हाथ से लिखी वर्कशीट दी थीं, क्योंकि हमारे पास उन्हें छापने के संसाधन नहीं थे। न ही विद्यार्थियों के माता-पिता इनकी फ़ोटोकॉपी करवाने का ख़र्च वहन कर सकते थे। विद्यार्थी हल की हुई वर्कशीट हमें वापस कर दिया करते थे। हमें समझ में आया कि हाथ से लिखी वर्कशीटों को हल करने का काम विद्यार्थी नहीं, बल्कि उनके माता-पिता और भाई-बहन कर रहे थे। हाथ से लिखी वर्कशीट विद्यार्थियों को अधिक आकर्षित नहीं करती थीं। लेकिन अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा उपलब्ध कराई गई कार्यपुस्तिकाएँ (वर्कबुक) हमारे विद्यार्थियों को ज़्यादा आकर्षक लगीं और इसलिए उन्होंने इनमें रुचि लेना शुरू किया। वे इन कार्यपुस्तिकाओं में दी गई गतिविधियों को सीखने के लिए उत्सुक थे। महामारी के दौरान, विद्यार्थी पिछली कक्षा की कार्यपुस्तिकाओं के साथ ही वर्तमान कक्षा की भी कुछ वर्कशीटों को थोड़ी सहायता के साथ पूरा कर पाए। ये कार्यपुस्तिकाएँ मेरे विद्यार्थियों के लिए उनकी कक्षा से सम्बन्धित कम-से-कम कुछ योग्यताओं को प्राप्त करने में सहायक रहीं।

टिप्पव्वा उल्लाट्टी, शासकीय मॉडल हायर प्राइमरी स्कूल, हिरेजन्तकल, गंगावती

स्कूल बन्द होने से पहले हम विद्यार्थियों को हल करने के लिए ऐसे प्रश्न दिया करते थे, जिनका उत्तर वे पाठ्यपुस्तक से सरलता से ढूँढ़ लेते थे। लेकिन हमने पाया कि वर्कशीटों के साथ हम अधिक प्रायोगिक और अनुभवजन्य प्रश्न तैयार कर सकते थे। हम अपने बच्चों को विभिन्न विषय-वस्तुओं से भी परिचित करवा सके और उन्हें आकर्षक व सार्थक रूप से सिखा पाए। वर्कशीटों से अभिभावकों को भी अपने बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में प्रतिभागिता करने का अवसर मिला, क्योंकि वे देख सकते थे कि उनके बच्चे क्या कर पा रहे हैं और कहाँ पिछड़ रहे हैं। अभिभावकों के साथ सतत संवाद करने से वे यह समझ पाए कि उनके बच्चों से क्या अपेक्षाएँ की जा रही हैं और इससे भी बच्चों को मदद मिली। बच्चों को उन वर्कशीटों को भरने में ज़्यादा आनन्द आता है, जिनमें गतिविधियाँ अधिक हों और लिखना कम पड़े। चूँकि कक्षा-2 और 3 के अधिकांश विद्यार्थी पढ़ना भूल गए थे, इसलिए वे वर्कशीट में दिए गए निर्देशों को नहीं समझ पा रहे थे और हमें यह बताना पड़ा कि उन्हें अपने काम को कैसे पूरा करना है। विद्यार्थियों को वर्कशीट हल करने में वाक़ई बहुत मज़ा आया। कक्षा-2 के एक विद्यार्थी ने जब मुझे अपनी वर्कशीट वापस की तो उसमें बड़ी उपलब्धि की भावना थी। अन्य विद्यार्थियों ने भी हमें बताया कि उन्हें वर्कशीटों को भरने में कितना आनन्द आया था और उन्होंने हमसे और वर्कशीट माँगीं। हमारी वर्कशीटों की सीमाएँ थीं। उनकी तस्वीरें स्पष्ट नहीं थीं और बच्चे चित्रों को समझ नहीं पाते थे लेकिन थोड़ी-सी मदद और सहयोग के साथ उन्होंने इन वर्कशीटों को पूरा कर लिया।

हमने पाया कि वर्कशीट समूह कार्य और हमउम्र बच्चों के साथ मिलकर सीखने को प्रोत्साहित करती हैं। इसका अर्थ यह भी रहा कि कुछ अवसरों पर हम बच्चों को एक-दूसरे की वर्कशीट की नक़ल करने और अपने साथी को काम पूरा करने में सहायता करने से भी रोक नहीं पाए! हालाँकि, बच्चों के सीखने पर किए गए अपने आकलन का विश्लेषण करने के बाद शिक्षक यह निर्णय कर पाएँ हैं कि बच्चों के साथ वास्तव में किन बातों पर काम किया जाना चाहिए।

** गंगावती, कर्नाटक के कोप्पल जिले के गंगावती तालुक का एक शहर है।*

अक्षता एस बेल्लुदि कर्नाटक के कोप्पल में स्थित अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के ज़िला संस्थान में स्रोत व्यक्ति हैं। उन्होंने सीखने-सिखाने की सार्थक कार्यप्रणालियों को समझने के लिए वैकल्पिक स्कूलों में काम किया है। उनकी रुचि अनुभवजन्य ज्ञान, भ्रमण करने और भारत के विभिन्न भागों में आदिवासियों की स्थानीय ज्ञान पद्धतियों का अन्वेषण करने में है। उनसे akshatha.belludi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : सौमित्र रॉय **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय